Class - XI
Subject - Music

Subject Teacher - Partha Sarkar

# श्रुति

## श्रुति (Shruti)

वह ध्वनि या नाद जो गीत में प्रयुक्त की जा सके तथा एक-दूसरे से अलग व स्पष्ट सुनी जा सके, उसे श्रुति कहते हैं।

*श्रुयतेः इति श्रुति*

अर्थात् जो कुछ भी स्पष्ट सुनाई दे वह श्रुति है। संगीतज्ञों ने प्राचीन समय में मधुर नादों में से कुछ ध्वनियाँ चुनीं जो एक-दूसरे से कुछ ऊँचाई पर थीं और जिनकी संख्या 22 है। 22 नादों को गाने-बजाने में कठिनाई को देखते हुए इनमें से 12 श्रुतियाँ चुन ली गईं और इन्हीं से संगीत पर गायन-वादन किया जाने लगा।

**Pt. Bhatkhande accepted the shruti as microtones like the ancient and medieval authors. He said microtones each one placed at a very small Cognizable nos.**

**22 श्रुतियों पर स्वर विभाजन :** 22 श्रुतियों को स्वरों में विभाजित करने के लिए शास्त्रकारों ने इनमें से कुछ अंतर पर सात श्रुतियों को चुना और उन्हें 'स्वर' की संज्ञा दी। इस प्रकार श्रुति और स्वर वास्तव में दो अलग नाम होते हुए भी एक ही हैं।

ये 22 श्रुतियाँ सात स्वरों में इस प्रकार विभाजित हैं :

स, म और प की चार-चार, रे ध में तीन-तीन, ग-नी में दो-दो श्रुतियों का अंतर होता है। पं० शारंगदेव ने अपने ग्रंथ 'संगीत रत्नाकर' में इस विभाजन की पुष्टि इस प्रकार की है :

*''चतुश्चतुश्चतुश्चैव षडज मध्यम पंचमाः।*
*द्वै द्वै निषाद गांधारी त्रिस्त्री रिषभ धैवतो।।''*

प्राचीन ग्रंथकार शुद्ध स्वरों को उनकी अंतिम श्रुतियों पर स्थापित करते थे, परंतु आधुनिक ग्रंथकार शुद्ध स्वरों को उनकी पहली श्रुति पर स्थापित करते हैं।